ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(8): 27-30
www.allresearchjournal.com
Received: 27-05-2021
Accepted: 16-07-2021

Dr. Manish Patel
Assistant Professor,
Department of Comparative Literature, Veer Narmad South Gujarat University
Surat, Gujarat, India

Corresponding Author:
Dr. Manish Patel
Assistant Professor,
Department of Comparative Literature, Veer Narmad South Gujarat University
Surat Gujarat, India

भारतीय संत साहित्य का तुलनात्मक अभ्यास (हिन्दी, मराठी और गुजराती सन्दर्भ में)

Dr. Manish Patel

प्रस्तावना

संत साहित्य भारतीय जनता का हृदय है। सदियों से जो विचार घूमड रहा था, वह मध्यकाल में बड़े पैमाने पर फैल गया। भारतीय संत साहित्य ग्रामीण, गरीब, किसान और कारीगर के वर्ग में पैदा हुवा था। ये संत साहित्य उच्च वर्ग का साहित्य न था। यहीं से भारतीय जनजागरण की शुरुआत हुई। संत साहित्य में सूफी, वैष्णव, निर्गुणवादी, शैव ये सब पंथ थे। सभी पंथों में एक ऐसा तत्त्व था जो समान रूप से पाया जाता है। ये प्रेम का तत्त्व है। यही प्रेम तत्त्व के आधार पर हिन्दी-मुसलमान ऊंच-नीच भूलकर एक हुए थे। ये प्रेम का रूप ही आध्यात्म था। मानव की समानता और मानव प्रेम ही प्रेम का मूल सूत्र है। इसीलिए राम और कृष्ण की कथा के द्वारा प्रेम को हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। संत साहित्य के प्रभाव से ही पीड़ित लोगों को जागरूक किया था, ये वंचित लोग थे। संस्कृति से वंचित थे। अछूत थे। नीच कहलाते थे। इनके बीच मेही ये संतों का जन्म हुआ, ये संत पीड़ित जाति में जन्मे हुए थे, इसीलिए उनके साहित्यों में पीड़ित जातियों का क्रोध अच्छी तरह से प्रगट होता हुआ दिखाई पड़ता है।

भारतीय संदर्भ में देखें तो तेरहवीं सदी के आसपास संत मत का एक सहयोगी समूह था। जिसे बहुत प्रसिद्धि मिली उनकी विशेषता यह थी कि वे अंतर्मुखी और प्रेम भक्ति से जुड़े थे। और सामाजिक रूप से वे एक समतावादी गुणों के सिद्धांत से जुड़े हुवे थे। ओर हिन्दू धर्म की जाति प्रथा के विरूद्ध थे। साथ में हिन्दू और मुस्लिम के अंतर के भी विरुद्ध थे। 'संत' का अर्थ है सत्य का मार्ग 'संत' शब्द संस्कृत की धात 'सद्' से बना है, और कई प्रकार से प्रयोग हुआ है। सत्य, ईमानदार, वास्तविक, आदि अर्थ होता है। सत्य जानने वाला या सत्य का अनुभव किया है वह संत। ये शब्द आमतौर पर एक अच्छे व्यक्ति को संबोधित किया जाता है। लेकिन इसका विशेष अर्थ मध्यकालीन भारत के संत कवियों से ही किया जाता है। संत कवियों ने अपने अपनी वाणी बोलचाल की भाषा में काव्य लिखे और स्थानीय भाषाओं में सामान्य जन को संबोधित किया, ईश्वर को महत्ता बनाकर धार्मिक आडम्बरों को मूल्यहीन कह कर खारिज कर दिया था।

भारतीय मध्यकालीन भक्ति काव्य की अनेक रचनाएं महत्वपूर्ण है। क्योंकि भक्ति तथा व्यक्ति के उदात्त संस्कारों को प्रकाश में लाती है। इसमें व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा भी करती है। ये एक चिरंजीवी जीवनी शक्ति का ऐसा स्रोत प्रवहमान करती है। जो एक सीमा तक आज के सन्दर्भ में भी उपादेय तथा प्रासंगिक है।

यह भारत की भावनात्मक एकता तथा उसकी सांस्कृतिक परम्परा की सूत्रबद्धता कि उद्देत चेतना उसमें दिखाई देती है। भक्ति काव्य में जनवादी चेतना के साथ साथ क्षेत्र या प्रदेश की सीमाओं को तोड़कर समन्वय की व्यापक चेष्टा की भूमिका का दर्शन कराती है। इन मध्यकालीन संत कवियों के जो प्राचीन संग्रह हमें प्राप्त होते हैं। उनमें कहीं भी ये नहीं दिखाई देता है, कि वहां मत-पंथ या क्षेत्रीय भावना से प्रभावित है। यही प्राचीन संत परम्परा हमें प्रमाणित करती है। साहित्य में 'संत' और 'भक्त' दोनों शब्दों का प्रयोग अलग अलग अर्थ में होता है। निर्गुणपंथ के अनुयायी 'संत' कहे जाते हैं जब सगुण पंथ के अनुयायी को 'भक्त' कहते हैं परन्तु इस विषय में तो कोई सन्देह नहीं कि भक्ति भावना 'संत' तथा 'भक्त' दोनों के अन्दर में समान होती है।

हम जानते हैं कि, कोई भी संत साहित्यकार या रचनाकार शून्य में रचना नहीं करता, वह जानकर या अनजाने में अपने चारों ओर के वातावरण से निरन्तर प्रभावित होता रहता है 'संत' या रचनाकार युग को बहुत कुछ देते हैं। और युग से बहुत कुछ लेते भी हैं। इसी कारण हमें किसी भी 'संत' या रचनाकार को जानने के लिए अथवा समझने के लिए उनका जन्म कहां हुआ, उनके पथ दर्शक कौन है। युग से प्रभावित होकर उन्होंने क्या लिखा, जो भी लिखा वह उसे समय की परिस्थिति से उभरने के लिए कितना मददरूप हुआ यह बातों को जानना ज़रूरी होता है। इसीलिए कबीर तुकाराम और अखा कि विचारधाराओं और उनके जीवनी से जुड़ी सभी छोटी बड़ी पहलू पर प्रकाश डाला है। कबीरदास, तुकाराम और आखा को व्यतीत हुए आज कई सदियां गुजर गई लेकिन फिर भी उनके जीवन चरित्र के सन्दर्भ में विद्वान अपने तर्क के अनुसार मत प्रस्तुत कर मतभेद की स्थिति में अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं। आज विभिन्न विद्वानों के मतों का तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद एक ठोस मत प्रस्तुत करने का विचार किया है।

भारत में गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था। उन्होंने ही मानवीय करुणा से प्रेरित होकर हिन्दू धर्म की समस्त रूढ़िबद्ध धाराओं का विरोध करते हुए एक नया नूतन मार्ग का प्रवर्तन किया था। युगों बाद उसी चेतना की अभिव्यक्ति कबीरदास ने कि, जिनके जीवन चरित्र के सम्बन्ध में आज भी विद्वानों में एकमत नहीं है। कबीर का जीवनकाल निश्चित नहीं है सो-सवासो वर्ष से निरन्तर उसकी चर्चा होती रही है। उनके जीवन चरित्र के सन्दर्भ में अब तक कुछ हि साधन सामग्रियां उपलब्ध हुई है। लेकिन प्रत्यक्ष प्रमाणों के अभाव के कारण आज भी छानबीन चल रही है। कबीर या भगत कबीर पंद्रहवीं सदी के भारतीय रहस्यवादी कवि और संत थे। वे हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन युग में ज्ञानाश्रुयिई-निर्गुण शाखा की काव्यधारा के प्रवर्तक थे इनकी रचनाओं ने हिंदी प्रदेश के भक्ति आन्दोलन को गहरे स्तर तक प्रभावित किया उनके लेखन सिखों के आदि ग्रन्थ में भी मिलता है। कबीर हिन्दू धर्म और इस्लाम के आलोचक थे। उन्होंने यज्ञोपवीत और ख़तना को बेमतलब करार दिया और इन जैसी धार्मिक प्रथाओं की सख्त आलोचना की थी। उनके जीवनकाल के दौरान हिन्दू और मुसलमान दोनों ने उन्हें अपने विचार के लिए धमकी भी दी थी।

तुकाराम का जन्म पुणे जिले के अंतर्गत देहू नामक गांव में १५२०-१५९८ में हुआ था। उनकी जन्मतिथि के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। मगर सभी दृष्टि से विचार करने पर १५२० में उनका जन्म हुआ होगा ये मान्य प्रतीत होता है। संत तुकाराम ने अपने जीवन में इसी बात पर बल दिया कि, सभी मनुष्य परम पिता ईश्वर की संतान हैं। इसीलिए सभी समान है। संत तुकाराम द्वारा 'महाराष्ट्र धर्म' का प्रचार हुआ, जिसके सिद्धांत भक्ति आन्दोलन से प्रभावित थे। 'महाराष्ट्र धर्मका' तत्कालीन सामाजिक विचारधारा पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। मगर इसे जाति और वर्ण व्यवस्था को सुधारने की सफलता प्राप्त नहीं हुई, किंतु इससे इनकार भी नहीं किया जा सकता, की समानता के सिद्धांत के प्रतिपादन द्वारा इसके प्रणेता वर्ण व्यवस्था को लचीला बनाने में सफल हुए हैं। बादमे महाराष्ट्र धर्म का उपयोग शिवाजी ने उच्चवर्गीय मराठों तथा कुनबियों बहुजन शूद्र को ऐकसूत्र में बांधने में किया।

अखा भगत गुजराती कवि थे। उनका समय १५९१-१६६५ माना जाता है। अखा भगत अहमदाबाद के निवासी थे। अखा को संसार से मन विरक्त होने पर घर छोड़कर वे तीर्थयात्रा के लिए निकले और गुरु की खोज करते हुए काशी पहुंचे, वहां से ज्ञान प्राप्त कर वापस अहमदाबाद आए। अखा भगत गुजराती भाषा के जाने माने प्राचीन कवियों में से ऐक है। अतः शुरुआती गुजराती साहित्यकारों मे से एक है। अखा जेतलपुर से अहमदाबाद आकर रहे थे। उनका सोनार का व्यवसाय था। आज भी खडियानी देसाईंनी पोल नाम का मकान 'अखाना ओरडा' अखा का कमरा कहा जाता है। अखा ने 'पंचिकरण', 'गुरु शिष्य संवाद', 'अनुभव बिंदु','चित विचार संवाद', आदि ग्रन्थों की रचना की ये रचनाओ मे दम्भ, दुराग्रह, सामाजिक दुर्गुणों आदि पर भी उन्होंने कठोर प्रहार किया।

कबीरदास मध्ययुगीन संत परंपरा में ऐक ऐसी बेजोड़ हस्ती है। जिनका समग्र व्यक्तित्व क्रान्तिकारी, विद्रोही, संघर्षशील, आक्रामक एवं प्रगतिशील रहा है। उनके क्रांतिकारी व्यक्तित्व का सर्वप्रमुख तत्व हमे दिखाई देता है। कबीर स्वभाव से निर्भीक, निडर एवं स्पष्टवादी थे। कबीरदास का जन्म ऐसी परिस्थितियों में हुआ था कि वहां सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक सभी परिस्थितियों में अस्थिरता फैली हुई

थी। धर्म में आडम्बरता और कर्मकाण्ड की बोलबाला थी। समाज में वर्णव्यवस्था रूढ़ होने के कारण ऊंच नीच का भेदभाव था। मुसलमान धर्म के अधिक होने के कारण हिन्दू मुस्लिम संघर्ष फैला हुआ था। ऐसी परिस्थिति में कबीर ने अपने क्रांतिकारी विचार समाज के आगे रखे ये क्रांतिकारी विचार पर कोई भी आसानी से चल सकता था। इसी विचारधारा से कबीर ने समाज मे जागरूकता फेलाई।

संत तुकाराम को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था इसी कारण सभी दुखों को भोगकर भक्ति में लीन होकर उनका व्यक्तित्व तेजस्वी हो गया था। संत तुकाराम सर्वस्व दांव पर लगाकर सामाजिक अन्याय के विरुद्ध खड़ा रहने वाला एक योद्धा था। कवि तुकाराम, भक्त तुकाराम, विद्रोही तुकाराम ये तीनों भूमिकाओं का एकत्रीकरण करके तुकाराम महापुरुष बन गए। संत तुकाराम ने समाज में धर्म के नाम पर अनीति का व्यापार करने वाले के सामने एक महान लड़वैया थे इसी तरह अनेक विद्वानों ने अनेक प्रतिक्रिया देकर तुकाराम के व्यक्तित्व को शब्दों में बांधने की कोशिश की है। मगर संत तुकाराम का व्यक्तित्व सागर की तरह है। जिसका जल माया नहीं जा सकता उसका प्रभाव इस चंद्रमा की तरह है जो अंधकार को नष्ट करके अपना प्रकाश प्रज्जवलित कर रहा है।

अखा के जीवन से सम्बन्धित स्वजन व्यक्ति एक के बाद एक मृत्यु हुई। साथ में असफल दाम्पत्य जीवन, टंक साल में लगाया गया मिथ्यारोप, भगिनी द्वारा किया अविश्वास, आदि से अखा ने घरबार छोड़ दिया। उसी प्रतिक्रिया से अखा के व्यक्तित्व विषयक गुण प्रकाश में आए। अखा के जीवन चरित्र से स्पष्ट है कि, विद्या के अध्ययन की दृष्टि से वे शास्त्रज्ञ या आचार्य नहीं थे। जाति या वंस से ऊंच या पूज्य नहीं थे, धन भी उसके पास नहीं था। समाज में उनकी स्थिति सामान्य से अच्छी न रही होगी, परन्तु अपनी रचनाओं से, धार्मिक अंधविश्वासों, सामाजिक विकृतियों को उन्होंने विरोध किया होगा। अपने अपराजेय नैतिक साहस का लोहा भल भलों को भी मान्य रहा होगा। उनका यह कार्य लोकमंगल की भावना व्यक्त करता है। अखा सदाचारियों के प्रति विनम्र व सहिष्णु किंतु, दुराचारी के प्रति उसके विपरीत स्वभाव तथा निर्लज, निर्भई, निष्कपट, परोपकार, सत्य, निष्ठा, विनय, एवं विवेक आदि गुणों से युक्त उनका तेजस्वी व्यक्तित्व रहा होगा।

संत कबीर, तुकाराम और अखा उपयुक्त भावधारा के मूल्यवान रत्न है। उनमें उनके सम्बन्धित प्रदेश तथा काल विधि में एक बड़े अंतराल दिखता है। किंतु जीवनदृष्टि विचारधारा और जगत के सन्दर्भ में, उनकी प्रतिक्रिया और दृष्टिकोण को देखें तो उतने अन्तराल के स्थान पर भी साम्यता दिखाई पड़ती है। भारतीय साहित्य की धाराओं में इन तीनों ही द्रष्टाओं में नई व्याख्या के साथ प्रस्तुत हो कर अत्यंत प्रासंगिक बन गई है। वह भौतिकता अथवा लौकिक उत्कर्ष की तुलना में अधिक महत्व देती है। साथ में जन जीवन की दीन-हीन दशा के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करते हैं। तीनों संत कवि शोषण करने वाले उच्च वर्ग के प्रति तीखा आक्रोश करते हैं। साथ ही रूढ़ीग्रस्त व्यवस्था के कारण हीनता ग्रंथि के शिकार हुए निर्धन निसहाय और नीच कहे जानेवाले जनमानस में आत्मविश्वास एवं आत्मगौरव के संचार का अकम्पित संकल्प भी है। कबीरदास और तुकाराम दोनों के निर्माण में तत्कालीन परिस्थितियां प्रेरक सिद्ध हुई है। इसी कारण दोनों को अपने अपने समय की परिस्थितियों की उपज माना जाता है। कबीर तुकाराम और आखा कि राजनीति में अस्थिरता एवं अव्यवस्था बड़े पैमाने में परिव्याप्त दिखाई देती है। कबीर तुकाराम और अखा तीनों के काव्य में यत्र-तत्र-सर्वत्र प्रगतिशील चेतना को देखा गया है। इसी से प्रभावित होकर तत्कालीन जन समाज को एक नई दिशा दी है। तीनों प्रगतिशीलता पर प्रकाश डाल कर उनमें व्याप्त समानताओं और विशेषताओं को विश्लेषित किया जा रहा है। कबीरदास, तुकाराम और अखा तीनों ने अपने अपने समय के अनुरूप मानवता विषयक प्रगतिशील दृष्टिकोण प्रस्तुत कर जन साधारणों में एकता प्रस्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। तत्कालीन समय में युग युग से पीडित, प्रताड़ित एवं निराश जनता के हृदय में आशावाद का संचार किया था। उनके द्वारा दिए गए उपदेशों के आधार पर बहूतोने अपनी सोच में परिवर्तन किया था। कबीर तुकाराम और अखा ने अपने अपने जीवन काल के धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, साहित्यिक, वैयक्तिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों की जिन विकृतियाँ का खंडन कर एक नूतन परम्परा को प्रस्तुत किया, जिनमें न भेद था, न ऊंच नीचता थी । जिन दिनों इन तीनों का आविर्भाव हुआ उन दिनों समाज एवं धर्म में पारंपरिक मार्ग प्रबल था। जिसका उन्होंने विरोध किया कबीरदास, तुकाराम और अखा तीनों ने पारंपरिक मान्यताओं का खंडन कर अपनी आधुनिकता का प्रगतिशील चेतना का परिचय दिया है। तुकाराम ने अपने समय की उन सभी मान्यताओं का विरोध किया है जो लोगों को राह दिखाने के बदले गुमराह करने पर तुली थी पारम्परिक मान्यताओं की तुलना में तुकाराम मन की शुद्धता पर अधिक बल देते हैं। भारतीय वर्णव्यवस्था के सन्दर्भ में तुकाराम अपने प्रगतिशील विचार अभिव्यक्त का वर्ण व्यवस्था के परिणाम स्वरूप निर्माण हुई जातिभेद, ऊंच नीच छूत अछूत आदि प्रवृत्तियों का विरोध करते दिखाई देते है। तुकाराम के समय में भी समाज तथा धर्म के विविध क्षेत्रों में बाह्याडम्बर था। दैवी, अंधविश्वास, पुरोहितवाद, पूजाविधि, मूर्ति पूजा और तीर्थाटन आदि का

बोलबाला थी। तुकाराम ने अपने प्रगतिशील विचारों द्वारा उसका खंडन कर अपनी प्रगतिशीलता का परिचय दिया है। अखा और कबीर की रचनाओं में समकालीन सामाजिक वातावरण व्यक्त हुआ है। पारिवारिक सम्बन्ध, कर्तव्य, श्रम विभाजन, जाति और नारी जीवन विषय कबीर की उक्तियाँ संख्या में जितने स्पष्ट है, इतनी आखा में नहीं है। गृहस्थ जीवन के समर्थन, भूत प्रेत, ज्योतिष, रसायन आदि के अंधविश्वासों के खंडन से सम्बन्धित आखा कि उक्तियाँ जितनी स्पष्ट है, उतनी कबीर की नहीं है। जन्म के आधार पर जाति, ऊंच नीच या ब्राहमण शूद्र के निर्णय संस्कारो हिन्दू मुसलमानों आदि सम्प्रदायों के जीवन आदि पर कबीर के व्यंग जीतने सचोट तीक्ष्ण है, उतने आखा के नहीं है।

हिन्दी संत कवि कबीर और महाराष्ट्र के वारकरी संप्रदाय के संतकवि तुकाराम और गुजराती कवि अखा समकालीन नही परन्तु समानधर्मी महापुरुष रहे हैं। आज जैसे जैसे समय बढ़ता जा रहा है वैसे तीनों के विचारों की प्रासंगिकता एवं मौलिकता बढ़ती जा रही है। कई सदियाँ व्यतीत होने के बावजूद भी उनके साहित्य की दीप्ति में कोई कमी नहीं आई है। आज भी हम उसे पढ़ते हैं, तो उसमें नित्य कुछ न कुछ नया मिलता है। इस कारण तीनों के प्रगतिशील चेतना का अधिकाधिक विस्तार से अध्यापन कर समस्त विश्व के सामने प्रस्तुत करना आवश्यक बन गया है।

सन्दर्भ सूची

1. कबीर और तुकाराम के काव्य में प्रगतिशील चेतना डॉ सुनील कुलकर्णी
2. कबीर और अखा तुलनात्मक अध्ययन डॉ रामनाथ शर्मा
3. राजस्थान एवं गुजरात के मध्यकालीन संत एवं भक्त कवि डॉ मदन कुमार जानी
4. कबीर और संत अवतार सी तुलनात्मक अध्ययन डॉ विश्व शर्मा